Shivashiromalikastutih

शिवशिरोमालिकास्तुतिः

Document Information

Text title : Shiva Shiromalika Stutih

File name : shivashiromAlikAstutiH.itx

Category : shiva

Location : doc_shiva

Proofread by : Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

Description/comments : From Shivastotraratnakara, Gita press

Latest update : October 1, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

August 30, 2023

sanskritdocuments.org

शिवशिरोमालिकास्तुतिः

पित्रोः पादाब्जसेवागतगिरितनयापुत्रपत्रातिभीत-
क्षुभ्यद्भूषाभुजङ्गश्वसनगुरुमरुद्वीप्तनेत्रार्नितापात् ।
स्विद्यन्मौलीन्दुखण्डस्रुतबहुलसुधासेकसंजातजीवा
पूर्वाधीतं पठन्ती ह्यवतु विधिशिरोमालिका शूलिनो वः ॥

अपने माता एवं पिताके चरण-कमलोंको सेवाके लिये जब पार्वतीपुत्र कार्तिकेय अपने वाहनपर चढ़कर उपस्थित होते हैं तब उनके वाहन मयूरसे डरकर भगवान शंकरके शरीरके आभूषणभूत सर्पोंके क्षुब्ध हो जाने तथा गहरी लम्बी साँसें लेनेसे भगवान् शंकरके नेत्रमें अग्निके समान ताप उठने लगता है, जिससे जटा-जूटमें स्थित चन्द्रखण्ड पसीजने लगता है । ऐसी अवस्थामें चन्द्रखण्डसे बहती हुई प्रचुर सुधाधारासे सिंचित शंकरके गलेमें विद्यमान ब्रह्माके सिरकी मुण्डमाला, जो निर्जीव है वह पुनः जीवित हो उठती है और पूर्व कालमें अध्ययन किये हुए शास्त्रोंका पाठ करने लगती है । ऐसे त्रिशूलधारी भगवान शंकरके गलेमें विद्यमान विधिमुण्डमाला आपलोगोंकी रक्षा करे ।

॥ इति शिवशिरोमालिकास्तुतिः सम्पूर्णा ॥

॥ इस प्रकार शिवशिरोमालिकास्तुति सम्पूर्ण हुई ॥

Proofread by Ganesh Kandu kanduganesh at gmail.com

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*